

न्यायालय : प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश, बैतूल (म.प्र.)
(पीठासीन अधिकारी : जयदीप सिंह)

सत्र प्रकरण क्रमांक : 462/2014
संस्थित दिनांक : 29-11-2014

मध्यप्रदेश शासन,
द्वारा आरक्षी केन्द्र-बैतूल,
जिला बैतूल (म.प्र.)

— — — — — अभियोजन

:: वि रु द्ध ::

1. सुरेश पिता मानिकराव धोटे, आयु 45 वर्ष,
निवासी-विनोबा वार्ड, भग्गूढाना, गंज, बैतूल
जिला बैतूल (म.प्र.)
2. रवि पिता रामकृष्ण कवड़कर, आयु 46 वर्ष,
निवासी-एल.एफ.एस.स्कूल के पास,
चंद्रशेखर वार्ड, बैतूल, जिला बैतूल (म.प्र.)
3. नन्नू उर्फ नानू पिता चुन्नी तेली, आयु 35 वर्ष,
निवासी-मूसाखेड़ी, थाना आठनेर,
जिला बैतूल (म.प्र.)

— — — — — अभियुक्तगण

उपस्थिति में :

राज्य द्वारा श्री गोवर्धन मालवीय, अपर लोक अभियोजक।
अभियुक्त सुरेश द्वारा श्री पंकज रघुवंशी अधिवक्ता।
अभियुक्त रवि द्वारा श्री मदन हीरे अधिवक्ता।
अभियुक्त नन्नू उर्फ नानू द्वारा श्री आकाश श्रीवास्तव अधिवक्ता।

:: नि र्ण य ::

(आज दिनांक 15-02-2018 को खुले न्यायालय में घोषित)

अभियुक्त नान्हू उर्फ नानू पर यह आरोप है कि उसने दिनांक 19.07.2008 को भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा सिविल लाईन बैतूल जिला बैतूल में छल करने के प्रयोजन से यह जानते हुए कि ग्राम मूसाखेड़ी, तहसील आठनेर, जिला बैतूल की खसरा नंबर 33, 90 एवं 243, रकबा 5.059, 0.077 एवं 2.023 कुल 7.159 हेक्टेयर की भूमि उसकी नहीं है, उक्त कूट रचना किये जाने हेतु और बैंक से ऋण प्राप्त करने हेतु खसरा किश्तबंदी पर तहसीलदार की सील एवं हस्ताक्षर कर, जो सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी नहीं की गयी थी, जिससे मूल्यवान प्रतिभूतियाँ सम्पादित की जा सकती थी, से छल किया और बैंक से

ऋण प्राप्त किया, यह जानते हुए कि सीलें, हस्ताक्षर, ऋण पुस्तिका एवं खसरा किश्तबंदी नकली थे तथा जिन्हें सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी नहीं किया गया है, जो असल के रूप में प्रयोग करने के आशय से कूटरचना की, यह जानते हुए कि उक्त सीलें, हस्ताक्षर, ऋण पुस्तिका एवं खसरा किश्तबंदी कूटरचित है, छल करने के आशय से प्रयोग में लायी जायेगी, कूटरचना की, यह जानते हुए कि उक्त कूटरचित खसरा, किश्तबंदी एवं कृषिभूमि के दस्तावेजों को कपटपूर्वक एवं बेईमानीपूर्वक यह जानते हुए कि वह कूटरचित है, भारतीय स्टेट बैंक, बैतूल से ऋण प्राप्त करने हेतु उपयोग किया, जो भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420, 467, 468 एवं 471 के अधीन दण्डनीय है। अभियुक्त सुरेश एवं रवि के विरुद्ध यह आरोप है कि उनके द्वारा सहअभियुक्त के साथ षड़यंत्र कर उक्त अपराध कारित किया, जो क्रमशः भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420/120बी, 467/120बी, 468/120बी तथा 471 के अधीन दण्डनीय है।

2. प्रकरण में कोई महत्वपूर्ण स्वीकृत तथ्य नहीं है।

3. अभियोजन कथा यह है कि आरोपी नन्नू उर्फ नानू द्वारा भारतीय स्टेट बैंक शाखा सिविल लाईन बैतूल में आकर स्वयं के स्वामित्व की सम्पत्ति खसरा नंबर 33, 90 एवं 243 रकबा 5.059, 0.077 एवं 2.023 कुल 7.159 हेक्टेयर मौजा मूसाखेड़ी, तहसील आठनेर जिला बैतूल बताकर खसरा किश्तबंदी बैंक में बतौर प्रतिभूति दिनांक 19.07.2008 को जमा किये, जिनके सही होने का विश्वास कर बैंक द्वारा उक्त सम्पत्ति को बंधक रखकर आरोपी को रु.1,60,000/- का ऋण प्रदान किया गया। आरोपी नन्नू द्वारा श्री सी.एस.सोनी अधिवक्ता से प्राप्त सर्च रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गयी थी, जिनके द्वारा यह बताया गया कि उनके द्वारा ऐसी कोई सर्च रिपोर्ट नहीं दी और न ही हस्ताक्षर की। बैंक द्वारा अधिवक्ता श्री आकाश शुक्ला से सर्च करवाने पर पाया गया कि आरोपी नन्नू उक्त भूमि का भूमि स्वामी नहीं है तथा उसके द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज कूटरचित थे एवं उसके द्वारा दस्तावेजों की कूटरचना कर उन्हें असल दस्तावेजों के रूप में उपयोग में लाते हुए बैंक को आर्थिक नुकसान पहुँचाने की नियत से बैंक के साथ धोखाधड़ी की है तथा उक्त दस्तावेजों के समर्थन में शपथपत्र प्रस्तुत कर अपराध किया है।

4. उक्त आशय का लेखी आवेदन प्र.पी-5 थाना कोतवाली बैतूल में प्रस्तुत किये जाने पर आरोपी नन्नू के विरुद्ध अपराध क्र. 948/2014 अंतर्गत धारा 420, 467, 468 एवं 471 भा.द.सं. पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना के दौरान बैंक से ऋण प्राप्त किये जाने संबंधी दस्तावेज, भूमि के खसरा किश्तबंदी, नक्शा, सर्च रिपोर्ट, शपथपत्र आदि प्राप्त किये गए। आरोपी नन्नू के हस्ताक्षर एवं राशन कार्ड जप्त किया गया। साक्षियों के कथन लेख किये गए। विवेचना के दौरान यह पाया गया कि आरोपी नन्नू, रवि कवड़कर, सुरेश धोटे एवं बैंक के तत्कालीन अधिकारी डी.एन.शर्मा के द्वारा षडयंत्र कर फर्जी दस्तावेज खसरा, किश्तबंदी तैयार कर बैंक में प्रस्तुत कर नन्नू उर्फ नानू के नाम से ऋण प्राप्त कर आपस में बांट लिया गया। तत्पश्चात् आरोपीगण को गिरफ्तार किया गया तथा आरोपीगण के विरुद्ध प्रथम दृष्ट्या अपराध स्थापित होना पाये जाने पर अभियोग पत्र श्रीमती नोरिन निगम, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट बैतूल के न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। चूँकि यह मामला अनन्यतः सत्र न्यायालय के द्वारा विचारणीय था, इसलिये उपार्पित किया गया और माननीय सत्र न्यायाधीश, बैतूल द्वारा अंतरण पर विचारण हेतु इस न्यायालय को प्राप्त हुआ।

5. आरोपी नन्नू उर्फ नानू के विरुद्ध भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420, 467, 468 एवं 471 एवं आरोपी रवि एवं सुरेश के विरुद्ध भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420/120बी, 467/120बी, 468/120बी तथा 471 का आरोप विरचित कर उन्हें पढ़कर सुनाया व समझाया गया, जिससे आरोपीगण ने इंकार किया और विचारण चाहा। धारा 313 द.प्र. सं. के परीक्षण में आरोपीगण का कहना है कि वे निर्दोष हैं, उन्होंने कोई अपराध नहीं किया है, उन्हें झूठा फंसाया गया है। बचाव में कोई प्रतिरक्षा साक्ष्य पेश नहीं की है।

6. द.प्र.सं. की धारा 317(2) के अंतर्गत सहअभियुक्त डी.एन.शर्मा के विरुद्ध पृथक विचारण हेतु आदेशित किया गया है।

7. प्रकरण में विचारणीय प्रश्न यह है कि :-

- (1) क्या अभियुक्त नन्नू उर्फ नानू ने दिनांक 19.07.2008 को भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा सिविल लाईन बैतूल जिला बैतूल में छल करने के प्रयोजन से यह जानते हुए

कि ग्राम मूसाखेड़ी, तहसील आठनेर, जिला बैतूल की खसरा नंबर 33, 90 एवं 243, रकबा 5.059, 0.077 एवं 2.023 कुल 7.159 हेक्टेयर की भूमि उसकी नहीं है, उक्त कूट रचना किये जाने हेतु और बैंक से ऋण प्राप्त करने हेतु खसरा किश्तबंदी पर तहसीलदार की सील एवं हस्ताक्षर कर, जो सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी नहीं की गयी थी, जिससे मूल्यवान प्रतिभूतियाँ सम्पादित की जा सकती थी, से छल किया और बैंक से ऋण प्राप्त किया ?

- (2) क्या आरोपी नन्नू उर्फ नानू ने यह जानते हुए कि सीलें, हस्ताक्षर, ऋण पुस्तिका एवं खसरा किश्तबंदी नकली थे तथा जिन्हें सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी नहीं किया गया है, जो असल के रूप में प्रयोग करने के आशय से कूटरचना की ?
- (3) क्या आरोपी नन्नू उर्फ नानू ने यह जानते हुए कि उक्त सीलें, हस्ताक्षर, ऋण पुस्तिका एवं खसरा किश्तबंदी कूटरचित है, छल करने के आशय से प्रयोग में लायी जायेगी, कूटरचना की ?
- (4) क्या आरोपी नन्नू उर्फ नानू ने यह जानते हुए कि उक्त कूटरचित खसरा, किश्तबंदी एवं कृषिभूमि के दस्तावेजों को कपटपूर्वक एवं बेईमानीपूर्वक यह जानते हुए कि वह कूटरचित है, भारतीय स्टेट बैंक, बैतूल से ऋण प्राप्त करने हेतु उपयोग किया ?
- (5) क्या आरोपी नन्नू उर्फ नानू द्वारा कारित उक्त अपराध में सुरेश एवं रवि द्वारा सहअभियुक्त के साथ षड़यंत्र कर सहभागिता की ?

:: सकारण निष्कर्ष ::

विचारणीय बिन्दु क्र. 1 से 5 :-

8. साक्ष्य विवेचन की पुनरावृत्ति को अपवर्जित करने के उद्देश्य से उक्त विचारणीय बिन्दुओं का निराकरण एक साथ किया जा

रहा है। (अ.सा.1) दीनदयाल, (अ.सा.2) कन्हैया, (अ.सा.3) जयवंती उर्फ फूलवंती, (अ.सा.4) भारत, (अ.सा.6) सुनील जीतपुरे के द्वारा कथन किया है कि उन्हें घटना की कोई जानकारी नहीं है। उक्त साक्षीगण द्वारा अभियोजन का समर्थन न करने के कारण उन्हें पक्षद्रोही घोषित कर उनसे सूचक प्रश्न पूछे गए हैं, किंतु उनके प्रतिपरीक्षण में ऐसा कोई तथ्य नहीं आया है, जिससे अभियोजन कहानी को बल मिलता हो।

9. (अ.सा.5) पंकज कुमार, प्रबंधक ने न्यायालयीन कथन में यह व्यक्त किया है कि वर्ष 2014 के अप्रैल माह में बैंक के क्षेत्राधिकारी को निरीक्षण के दौरान को यह पता चला कि आरोपी नन्नू द्वारा बैंक से रु.1,60,000/- का ऋण वर्ष 2008 में लिया था, किंतु आरोपी नन्नू द्वारा जमीन के कागजात, खसरा किश्तबंदी आदि ऋण प्रकरण में संलग्न किये गए थे, जिसमें दर्शायी गयी जमीन नन्नू के नाम से नहीं पायी गयी थी। तब पुनः सर्च करायी गयी थी तब बताया गया कि आरोपी नन्नू के नाम पर कोई जमीन मूसाखेड़ी में नहीं है और तब थाना कोतवाली में लिखित शिकायती आवेदन प्र.पी-5 प्रस्तुत कर प्रथम सूचना प्रतिवेदन प्र.पी-6 पंजीबद्ध कराया और प्रकरण में प्रस्तुत दस्तावेज की सत्यप्रतिलिपि, जिसमें किसान क्रेडिट लोन प्र.पी-7, ऋण आवेदन फार्म प्र.पी-8, लोन स्वीकृति जानकारी प्र.पी-9, स्वीकृति पूर्व निरीक्षण प्रतिवेदन प्र.पी-10, पुनः प्रवर्तन पत्र प्र.पी-11, 12, सरपंच का प्रमाण-पत्र प्र.पी-13, नन्नू का खसरा पंचसाला प्र.पी-14, किश्तबंदी प्र. पी-15, नन्नू का शपथपत्र प्र.पी-16, सर्च रिपोर्ट चंद्रशेखर सोनी की प्र. पी-17, आकाश शुक्ला की सर्च रिपोर्ट प्र.पी-18 प्रस्तुत की है। आरोपी नन्नू द्वारा ऋण प्राप्त करने हेतु बैंक में जमीन के फर्जी दस्तावेज प्रस्तुत किये थे। थाना प्रभारी द्वारा प्रकरण से संबंधित जानकारी मांगी थी, जो प्र.पी-19 एवं 20 के अनुसार है। (अ.सा.5) पंकज कुमार ने प्रतिपरीक्षण में व्यक्त किया है कि नन्नू ने किसान क्रेडिट योजना के तहत आवेदन किया था। नन्नू का ऋण 19.07.2008 को स्वीकृत किया गया था और उनके फर्जी होने की जानकारी अप्रैल 2014 में हुई थी। नन्नू दिनांक 21.11.2014 को ऋण राशि रु. 1,60,000/- का भुगतान कर दिया है।

10. (अ.सा.8) उपनिरीक्षक अशोक वरकड़े उपनिरीक्षक ने व्यक्त किया है कि दिनांक 14.07.2014 को थाना बैतूल में सहायक

उपनिरीक्षक के पद पर पदस्थ रहते ए.एस.आई.सुमन मिश्रा ने आरोपी के विरुद्ध प्र.पी-5 का प्रथम सूचना प्रतिवेदन पंजीबद्ध किया था और विवेचना के दौरान गवाहों के कथन लेख कर बैंक से प्र.पी-19 का पत्र लिखकर जानकारी चाही थी और दस्तावेजों की मूल से सत्यापित मूल प्रतियाँ विवेचना के दौरान ही प्राप्त की थी। आरोपी नन्नू, रवि एवं सुरेश को गिरफ्तारी पंचनामा प्र.पी-22, 24 व 25 बनाकर गिरफ्तार किया गया। आरोपी नन्नू से एक राशन कार्ड की छायाप्रति पेश किये जाने पर तथा 6 प्रति हस्ताक्षर नमूना जॉच के लिए गवाहों के समक्ष लिये थे, जिन्हें जप्ती पत्रक प्र.पी-23 बनाकर जप्त किया। प्रतिपरीक्षण में यह व्यक्त किया है कि प्र.पी-8 के खसरा किशतबंदी में भूमि स्वामी नन्नू ही है और खसरा नंबर 33, 90 और 243 का भूमि स्वामी नन्नू ही उल्लेखित है और 2008 की खसरा किशतबंदी खतौनी के आधार पर नन्नू द्वारा बैंक से ऋण लिया गया था। पूर्व में चंद्रशेखर सोनी द्वारा जो सर्च रिपोर्ट दी गयी थी, वह भी प्रकरण में भूमि की सत्यता के संबंध में संलग्न है और चंद्रशेखर सोनी द्वारा यह व्यक्त किया था कि उक्त रिपोर्ट उनके द्वारा नहीं दी गयी, किंतु उनके कथन लेख नहीं किये गए। खसरा किशतबंदी की जॉच राजस्व विभाग में जाकर नहीं की और आकाश शुक्ला की जॉच रिपोर्ट के आधार पर नन्नू को आरोपी माना गया है।

11. (अ.सा.7) रामकिशोर ने व्यक्त किया है कि आरोपी नन्नू को उसके सामने पुलिस ने गिरफ्तार कर गिरफ्तारी पत्रक प्र.पी-2 बनाया था। पुलिस ने उसके सामने आरोपी नन्नू से कोई कागज वगैरह प्राप्त नहीं किया। पुलिस ने आरोपी नान्हू का परिचय पत्र जप्त कर जप्ती पत्रक प्र.पी-23 बनाया था। उक्त साक्षी द्वारा प्रतिपरीक्षण में व्यक्त किया है कि पुलिस ने आरोपी नान्हू को पुलिस थाने बुलाकर उसे गिरफ्तार किया था तथा गिरफ्तारी पत्रक में यह बोलकर साईन कराये थे कि आपके सामने नान्हू ने हस्ताक्षर किये हैं।

12. (अ.सा.9) आकाश शुक्ला द्वारा न्यायालयीन कथन में यह व्यक्त किया है कि वे 2008 से स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया शाखा बैतूल में विधिक सलाहकार के पद पर पदस्थ हैं। उनके द्वारा आरोपी नन्नू के ग्राम मूसाखेड़ी में स्थित खसरा नंबर 33, 90 और 243 के खसरों की सर्च की गयी। नन्नू वल्द चुन्नी द्वारा बैंक के समक्ष खसरा नंबर 33 का

रकबा 5.059 हेक्टेयर, खसरा नंबर 90 का रकबा 0.077 एवं खसरा नंबर 243 का रकबा 2.023 हेक्टेयर का स्वयं को भूमिस्वामी होना बताकर बैंक से ऋण लिया था, परंतु उनके द्वारा सर्च की गयी तब खसरा नंबर 33 का रकबा 0.809 हेक्टेयर था और उक्त भूमि की स्वामी सुनीता थी। खसरा नंबर 90/1 का रकबा 0.038 हेक्टेयर स्वामी नन्नू उर्फ नानू था। खसरा नंबर 243 का रकबा 2.023 का स्वामी कन्हैया वल्द चुन्नी था और इस तरह नन्नू ने कूट रचित दस्तावेज प्रस्तुत कर ऋण प्राप्त कर बैंक के साथ धोखाधड़ी की। उनके द्वारा दी गयी सर्च रिपोर्ट प्र.पी-18 है, जो बैंक के द्वारा सत्यापित की गयी है। उक्त साक्षी ने प्रतिपरीक्षण में व्यक्त किया है कि उन्होंने सब रजिस्ट्रार कार्यालय एवं तहसील कार्यालय से जानकारी लेकर सर्च रिपोर्ट दी है।

13. उपरोक्त साक्ष्य विवेचन से स्पष्ट है कि अभियोजन ने अभिलेख पर लोन से संबंधित दस्तावेज किसान क्रेडिट लोन प्र.पी-7, ऋण आवेदन फार्म प्र.पी-8, लोन स्वीकृति जानकारी प्र.पी-9, स्वीकृति पूर्व निरीक्षण प्रतिवेदन प्र.पी-10, पुनः प्रवर्तन पत्र प्र.पी-11, 12, सरपंच का प्रमाण-पत्र प्र.पी-13, नन्नू का खसरा पंचसाला प्र.पी-14, किश्तबंदी प्र.पी-15, नन्नू का शपथपत्र प्र.पी-16, सर्च रिपोर्ट चंद्रशेखर सोनी की प्र.पी-17 प्रस्तुत किये हैं, जिनके अवलोकन से स्पष्ट है कि आरोपी नन्नू द्वारा फरियादी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया से रु. 1,60,000/- का ऋण लिया। ऋण लेते समय भूमि से संबंधित राजस्व दस्तावेज प्रस्तुत किये और प्रथम सर्च रिपोर्ट त्रुटिपूर्ण होने के कारण लोन स्वीकृत हुआ। आरोपी नन्नू ने लोन प्राप्त किया और पुनः सर्च कराये जाने पर आरोपी नन्नू द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त राजस्व दस्तावेज कूट रचित होना प्रमाणित है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उक्त खसरा दस्तावेज आरोपी नन्नू द्वारा ही बैंक में प्रस्तुत किये गए और आकाश शुक्ला द्वारा दी गयी सर्च रिपोर्ट प्र.पी-18 के अनुसार खसरा नंबर 33 का रकबा 0.809 हेक्टेयर था और उक्त भूमि की स्वामी सुनीता थी। खसरा नंबर 90/1 का रकबा 0.038 हेक्टेयर स्वामी नन्नू उर्फ नानू था। खसरा नंबर 243 का रकबा 2.023 का स्वामी कन्हैया वल्द चुन्नी था और इस तरह नन्नू ने कूट रचित दस्तावेज प्रस्तुत कर ऋण प्राप्त कर बैंक के साथ धोखाधड़ी की।

14. उक्त स्थिति में जहाँ कि अभियोजन द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य से यह तथ्य प्रमाणित है कि आरोपी नन्नू द्वारा छलपूर्वक फर्जी दस्तावेजों को बैंक में प्रस्तुत कर अवैधानिक रूप से ऋण प्राप्त किया गया तब जहाँ कि सम्पूर्ण मामला दस्तावेजी साक्ष्य पर आधारित है तब आरोपी नन्नू पर ही यह प्रमाण भार है कि वह उक्त दस्तावेजों को कूटरचित न होना प्रमाणित करें, किंतु इस संबंध में बचाव पक्ष द्वारा कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है और अभियोजन साक्षी पंकज कुमार (अ.सा. 5) एवं आकाश शुक्ला (अ.सा.9) के न्यायालयीन कथन प्रतिपरीक्षण में अखण्डित हैं, जिन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। जहाँ तक आरोपी सुरेश एवं रवि का प्रश्न है, उनके आपराधिक दायित्व के संबंध में प्रकरण में विश्वसनीय साक्ष्य का सर्वथा अभाव है। उक्त आरोपीगण के न तो किसी दस्तावेज पर हस्ताक्षर है और न ही कोई विश्वसनीय साक्ष्य अभिलेख पर है।

15. उपरोक्त साक्ष्य विवेचन के आधार पर अभियोजन आरोपी सुरेश एवं रवि के विरुद्ध अपना मामला प्रमाणित करने में असफल रहा है, किंतु आरोपी नन्नू के विरुद्ध मामला प्रमाणित करने में सफल रहा है। परिणामस्वरूप आरोपी सुरेश एवं रवि को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420/120बी, 467/120बी, 468/120बी तथा 471 के आरोप से दोषमुक्त किया जाता है तथा आरोपी नन्नू को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420, 467, 468 एवं 471 के आरोप में दोषी पाकर दोष सिद्ध किया जाता है।

16. दण्ड के प्रश्न पर उभय पक्ष को सुने जाने हेतु निर्णय लेखन स्थगित किया जाता है।

(जयदीप सिंह)

प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश
बैतूल (म.प्र.)

पुनश्च:

17. दण्ड के प्रश्न पर उभय पक्ष को सुना गया। आरोपी की ओर से यह व्यक्त किया गया है कि उसका कोई आपराधिक रिकार्ड नहीं है, उसका प्रथम अपराध है। दण्ड के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाये

जाने का निवेदन किया गया। अपर लोक अभियोजक द्वारा आरोपी को कठोरतम दण्ड देने का निवेदन किया। प्रकरण के तथ्य एवं परिस्थितियों में और आरोपी द्वारा बैंक में जमा लोकधन के प्रति कारित अपराध को दृष्टिगत रखते हुये आरोपी को निम्नवत् दण्डित किया जाता है :-

अभियुक्त का नाम	धारा	कारावासीय सजा	अर्थदण्ड	अर्थदण्ड का व्यतिक्रम करने पर
नन्नू उर्फ नानू पिता चुन्नी तेली, आयु 35 वर्ष, निवासी-मूसाखेड़ी, थाना आठनेर, जिला बैतूल (म.प्र.)	धारा 420 भा.द.सं.	चार वर्ष सश्रम	रु. 1,000 / -	दो माह सश्रम
	धारा 467 भा.द.सं.	पाँच वर्ष सश्रम	रु. 1,000 / -	दो माह सश्रम
	धारा 468 भा.द.सं.	चार वर्ष सश्रम	रु. 1,000 / -	दो माह सश्रम
	धारा 471 भा.द.सं.	दो वर्ष सश्रम	रु. 1,000 / -	दो माह सश्रम

18. आरोपी को दी गयी सभी कारावासीय सजा एक साथ भुगतायी जाये। आरोपी द्वारा अर्थदण्ड अदा न करने की दशा में दिये गए कारावास की सजा मूल कारावासीय सजा से पृथक से भुगतायी जाये।

19. प्रकरण में कोई जप्तशुदा सम्पत्ति नहीं है। आरोपी नन्नू उर्फ नानू द्वारा बैंक में जमा करायी गयी राशि रु. 1,60,000 / - अपील अवधि पश्चात् अपील न होने की दशा में भारतीय स्टेट बैंक मुख्य शाखा बैतूल को वापस की जाये। अपील होने की दशा में माननीय अपीलीय न्यायालय के आदेशानुसार निराकृत की जाये।

20. अभियुक्त नन्नू को निर्णय की निःशुल्क प्रतिलिपि प्रदान की जाये। उसका सजा वारंट तैयार कर सजा भुगताये जाने हेतु जिला जेल बैतूल भेजा जाये।

21. अभियुक्त सुरेश एवं रवि के जमानत मुचलके निर्णय दिनोंक से 6 माह पश्चात् भारमुक्त किये जाते हैं।

22. अभियुक्तगण द्वारा न्यायिक अभिरक्षा में बितायी गयी अवधि अभियुक्तगण को दी गयी कारावासीय सजा में समायोजित किया

जाये। द.प्र.सं. की धारा 428 के अंतर्गत निरोध अवधि की तालिका बनायी गयी जो निर्णय का अंग होगी।

निर्णय खुले न्यायालय में हस्ताक्षरित व मेरे निर्देश पर टंकित किया।
दिनांकित कर घोषित किया गया।

(जयदीप सिंह)
प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश
बैतूल (म.प्र.)

(जयदीप सिंह)
प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश
बैतूल (म.प्र.)

बैतूल
दिनांक : 15 / 02 / 2018